शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ. शकुन्तला कालरा के बाल काव्य में विषय वैविध्य

*रेखा मण्डलोई (शोधार्थी)
**डॉ. आशा अग्रवाल (निर्देशक)
*भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान
**श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

वर्तमान समय चुनौतियों से परिपूर्ण है। जहाँ एक ओर प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में अभिभावकों की सोच मशीनी सभ्यता से परिपूर्ण पढ़ाई में बालकों का हित तलाश रही है वहीं धर्म, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का पतन होता दिखाई दे रहा है। आज बालक विभिन्न प्रकार की चुनौतियों व संघर्षों के मध्य पल-बढ़ रहा है। बच्चों का बचपन वर्तमान जीवन शैली के कारण शनैः शनैः खत्म होता जा रहा है, जो खतरनाक संकेत है। आधुनिक समाज में अनायास आयी इन विकृतियों को बाल साहित्यकार देख रहा है। सांस्कृतिक बदलावों के इस दौर में सचेत होना आवश्यक है। अतः बालकों के संकटग्रस्त बचपन को बचाने की चुनौतियों का सामना करने के साथसाथ कम्प्यूटर, टेलीविजन और मोबाइल के सामने उपेक्षित होते बाल काव्य की ओर बाल पाठकों का रूझान बढ़ाने के उद्देश्य से डॉ..शकुन्तला कालरा बाल काव्य सृजन में तत्पर हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके साहित्य में बाल काव्य में विषय वैविध्य पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

श्री चन्द्रजी ने बाल काव्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि, "बाल काव्य बौद्धिक आयाम नहीं, अनुभूतियों का प्रकरण है उसमें जीवन का यथार्थ और कल्पना की सुकुमारता का परिचय है।" वर्तमान समय में बाल काव्य की रचना प्रचुरता के साथ की जा रही है। नये-नये कथ्य और रचना विधान की चुनौतियों को स्वीकारता हुआ बाल साहित्य आज कदम-कदम बढ़ रहा है। इस पुनीत कार्य को सक्रियता के साथ आज के अनेक सजग और मनस्वी बाल साहित्यकार कर रहे हैं।

बाल मन की अतल गहराइयों में उतरकर उन्हें शब्द प्रदान करना अपने आप में चुनैती पूर्ण कार्य है। बाल साहित्यकार इसे बखूबी कर रहे हैं। उन्होंने अपने बाल काव्य में परिस्थितियों से रचे-पके अनुभव को वाणी दी है। आज का बालक क्या सोचता है ? उसकी समस्याएँ क्या है ? उसकी चुनौतियाँ क्या है ? वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब मानवीय मूल्यों का घोर पतन हो रहा है - इसमें उसकी स्थिति क्या है ? और साथ ही उन्हें क्या देना चाहिए, जैसे विभिन्न विषयों पर चिंतन परक काव्य रचनाओं में संलग्न है। उनकी रचनाओं का आधार बाल मनोविज्ञान तो रहा ही है साथ ही नैतिक मूल्यों की अप्रत्यक्ष स्थापना का भी प्रयास उसमें समाहित है।

बाल काव्य में बालकों की सहज क्रीडाएं, हास-परिहास, उनकी कल्पनाएँ और जिज्ञासाएँ यथार्थ भाव से परिपूर्ण मौलिकता लिए हुए है। श्री कृष्ण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शलभ के अनुसार - "शकुन्तला कालरा की कविताएँ ठिठकती नहीं ठुमकती है।"

1 बाल मनोविज्ञान

शकुन्तलाजी की बाल-मन के लिए भावनाएँ स्वानुभूत्तिजनित होने के कारण मौलिकता लिए हुए हैं। वे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से परिपूर्ण है। बच्चों के लिए लिखना आमतौर पर परकाया प्रवेश जैसा चुनौतीपूर्ण कार्य है। उसमें न केवल बाल मनोविज्ञान को समझने जैसी चुनौती होती है बल्कि अपने से अधिक जिज्ञासु और ऊर्जावान मस्तिष्क की अपेक्षाओं पर खरा भी उतरना होता है। ऐसा कार्य वही साहित्यकार कर पाते हैं जिनमें नया सोचने और उसको रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करने की क्षमता होती है। बाल मनोविज्ञान की एक झाँकी है :

"होगी दावत खूब उड़ाना, गरम समोसे छक कर खाना।
ठंडी-ठंडी कुल्फी पाना, मित्रों तुम सब खुशी मनाना।"1

शकुन्तलाजी ने बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण बखूबी किया है। जिसमें बालक आत्मीय भाव से मौज-मस्ती की उद्देश्य पूर्ति हेतु अपने दोस्तों को अपने जन्म दिवस पर आमंत्रित कर रहा है। बाल-मन को लुभाने वाली दावत में उनके पसंदीदा व्यंजनों का चित्रण करके बाल मन को जैसे खोल कर रख दिया है। बच्चे कचौरी-समोसे, चाकलेट-टाफी और ठंडी-ठंडी आइस्क्रीम में ही इतने खुश हो जाते हैं कि उन्हें इससे आगे कुछ अच्छा नहीं लगता।

कल्पनाशीलता और जिज्ञासा

बालक नैसर्गिक रूप से कल्पनाशील प्रवृत्ति का होता है। बालक जितना कल्पनाशील होता है, उतना ही अधिक प्रकृति के चराचर स्वरूप को जानने के लिए सहज जिज्ञासु भी होता है। हम लोग कल्पना के जिस स्तर पर कभी पहुँच नहीं पाते, वहाँ बालक अतिशीघ्र और सहजता के साथ पहुँच जाता है। बालक के लिए तो प्रकृति का कण-कण नवीनता से परिपूर्ण होता है। वह पेड़, पौधे, जीव-जंतु, सूर्य-चंद्र जैसे विषय को गहराई से जानने को आतुर रहता है। उसके लिए यह विषय जिज्ञासा लिए हुए रहता है कि एक ही जैसे दिखने वाले सूर्य में ताप तथा चन्द्रमा में शीतलता का वास क्यों होता है ? उसकी सोच में यह समाहित रहता है कि जुगनुओं को कौन प्रकाशित करता है। बच्चों की इस प्रकार की सहज कल्पना और जिज्ञासाओं को अपने काव्य में बड़ी चतुरता से समाहित किया है।

काले बादलों से बरसते पानी को देखकर बालकों का जिज्ञासु मन अपना समाधान ढूँढने का प्रयास करता है। ऐसे समय में उनकी जिज्ञासा को शांत करने का तरीका बड़ा ही प्रभावशाली बन पड़ा है। उन्होंने बादल से बरसने वाली बूँदों के समुद्र तक पहुँचने और सीपी के मुख में पहुँचकर मोती बन जाने की पूरी यात्रा को अनूठे ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। साथ ही प्रश्नातुर बालक की जिज्ञासाओं को स्वतः विराम तक पहुँचा दिया है :

"काले-काले मेघा बरसे, भर-भर लाए पानी रे।
खिल-खिल जाती धरती रानी, झूम उठे दीवानी रे।"2

2. ज्ञानवर्धक और संस्कार प्रधान :

बाल साहित्य न केवल मनोरंजक और रूचिकर हो अपितु ज्ञानवर्धक और संस्कार प्रधान भी होना चाहिए। शकुन्तलाजी के साहित्य का आधार चाहे वह गद्य हो या पद्य, बालकों के ज्ञान तंतुओं का विकास करना ही रहा है। उनके साहित्य में बालकों की आयु को आधार बनाकर ज्ञान का विधान किया गया है। बच्चों को प्राकृतिक परिवेश से रूबरू करवाते हुए लेखन के विषय को

पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, फूल, नदी, तालाब, पहाड़, झरने, आकाश, तारे, चाँद-सूरज तथा वर्षा आदि पर केन्द्रित किया है। ये सभी विषय बालकों के प्रारम्भिक ज्ञान की सीमा में आते हैं। प्रस्तुत रचना में सूर्योदय व सूर्यास्त की जानकारी के साथ-साथ भेदभाव रहित समानता पूर्ण व्यवहार के लिए प्रेरित करते हुए बाल मन को संस्कारित किया गया है। प्रतिदिन निकलने वाले सूरज की उपयोगिता से परिपूर्ण रचना :

"आसमान के रंगमंच पर, सूरज काका नित आते हैं।
भेदभाव ना करे किसी से, समता सबको सिखलाते हैं।।"3

3. राष्ट्र प्रेम :

भारत में स्वतंत्रता की विफलता के बाद अंग्रेजों ने स्वयं को अधिक दृढ़ता के साथ स्थापित करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया था। इस स्थिति की प्रतिक्रिया स्वरूप भारत की जनता में राष्ट्रीयता की भावनाएँ हिलोरे लेने लगी, जिसकी अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से विभिन्न साहित्यकारों द्वारा की जाने लगी। उस समय के अधिकांश साहित्यकारों ने बालोपयोगी कविताओं, कहानियों व नाटकों की रचना की जिसका लक्ष्य शिक्षा परक होने के साथ-साथ बालकों में राष्ट्रीय चेतना का जागरण भी था। 'जय-जय भारत प्यारा' रचना संग्रह तो राष्ट्रीयता की भावना को केन्द्र में रखकर ही रचा गया है। 'देश के वीर सिपाही हम' रचना बाल पाठकों में राष्ट्रीयता के भाव का संचार करने में सक्षम है, जो बाल पाठकों को अपनी मंज़िल की ओर सतत् बढ़ते रहने की प्रेरणा देते हुए अन्य लोगों में भी देश के प्रति समर्पण व त्याग की भावना भरती है :

"हम हिम्मत से लड़े, देश के वीर सिपाही हम।
जो किस्मत का रोना रोते, वे कायर कहलाते।।"4

रोचक एवं मनोरंजन

रोचकता और मनोरंजन साहित्य का अनिवार्य गुण माना जाता है। बाल साहित्य रोचक, प्रेरक व मनोरंजक होंगे तो बाल मन उसमें रच-बस जाता है। बालकों की दुनिया बड़ों से सर्वथा भिन्न होती है। आकाश की तरह निर्मल और विशाल होती है। प्रत्येक कार्य को आँकने का उनका अपना नज़रिया होता है। बाल साहित्य लिखते समय बालकों की रूचि, योग्यता एवं प्रतिभा को ध्यान में रखा जाता है। बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जिससे बालक का बौद्धिक विकास, नैतिकता का उत्थान एवं चरित्र निर्माण खेल-खेल में चुपके-चुपके रोचक और मनोरंजक ढ़ंग से हो जाए जिसका पता बालक को भी न चले।

शकुन्तलाजी द्वारा रचित बाल साहित्य बालकों में धैर्य, साहस, सूझ-बूझ, अनुशासन तथा देश भक्ति जैसे गुणों का विकास कर उनको भावि भविष्य की संभावनाओं के अनुरूप तैयार करता है। बाल साहित्य में मनोरंजन को प्रमुख स्थान दिया गया है। मीकू बंदर के माध्यम से यहाँ बाल मनोरंजन का भरपूर मसाला परोसने का कार्य किया गया है :

"पहना चश्मा दादाजी का, साथ में टोपी तिल्लेदार।
हाथ लिए रिमोट को मीकू, देख रहा टी.वी. रंगदार।।"5

4. वात्सल्य

सम्पूर्ण संसार में यदि मधुरतम संबंध को खोजा जाएगा तो हमें एक शिशु और उसकी माँ के संबंध के रूप में ही प्राप्त होगा। माँ को शिशु की अठखेलियाँ बहुत रिझाती है। अगर कभी माँ अपने शिशु को कष्ट में देखती है तो उसे असहनीय पीड़ा होती है। शिशु की पीड़ा को देखकर माँ के हृदय में जो हूक उठती है, वह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ममता का ही स्वरूप है और शिशु माँ की 'ममता की छाँव में' अपने आपके लिए सुरक्षित अनुभूति का आभास करता है। जन्म से ही मानव हृदय संगीत का प्रेमी होता है। लोरियाँ शिशुओं को महा आनन्द की अनुभूति तो देती ही है, उसका शब्द ज्ञान बढ़ाने की क्षमता से भी परिपूर्ण होती है। यही शब्द ज्ञान वाक्य ज्ञान को बढ़ाते हुए बालकों को आत्माभिव्यक्ति की क्षमता से परिपूर्ण करता है।

अपने बच्चे के प्रति लाड़-प्यार के भाव में भावुक होने पर माँ उसे कभी राम, कभी कृष्ण, कभी लल्लुआ तो कभी बिटवा आदि कहकर सम्बोधित करती है। वह कभी चाँद से तो कभी चाँदनी से तो कभी निंदिया रानी से उसे सुलाने का आग्रह करती है। बच्चे जब दिन भर भाग दौड़ करते हैं तो पैरों में अत्यधिक दर्द होने लगता है, जिसके कारण उनको नींद नही आ पाती। इस कारण वात्सल्य भाव से परिपूर्ण एक माँ का निंदिया से आग्रह रहता है कि अगर तू आ जाएगी तो मेरे बेटे का दर्द चला जाएगा :

"फूलों के संग रहा महकता, चिड़िया जैसा रहा चहकता।
जी भर खूब करी शैतानी, सुनी एक ना की मनमानी।।"6

निष्कर्ष

माँ और बालक सृष्टि का चिर सनातन सम्बन्ध है। इन दोनों के बीच न जाने कब किन्हीं अज्ञात क्षणों में छलछलाती, गुदगुदाती शब्दों के पंखों पर लय की थपथपाहट और भोले रिश्तों की गर्माहट के बीच माँ के होंठों से फूटी लोरी। यानि एक कविता एक गीत तब से अब तक कविता विभिन्न रूपों, प्रवृत्तियों के बीच ठीक ऐसे विकसित होती रही है जैसे बीज अंकुर फिर पौधा, कली और फूल-फल। यह सिलसिला एक बहती गुनगुनाती नदी की तरह चला आ रहा है और चलता रहेगा क्योंकि जीवन का एक नाम कविता है। काव्य के प्रति ऐसे भाव समेटे शकुन्तलाजी ने बालकों के अपार संसार की कल्पना को अपने काव्य संग्रह में साकार किया है। बाल मनोविज्ञान को केन्द्र में रखकर रची गई इन कविताओं में बच्चें की तरह अनगढ़ सुगढ़ स्वभाव में अनुभूति से अभिव्यक्ति तक भरा पूरा बच्चा कुलाँचे भरता दिखाई देता है।

डॉ.शकुन्तला कालरा की कविताएँ बाल मन की कविताएँ हैं। ये प्रचलित विषयों पर लिखे जाने के बावजूद अपने तेवर में अलग सी, बनावट में भिन्न, नवीन अभिव्यक्ति और शब्दों की अर्थवत्ता के साथ अपना संदेश प्रकट करती है। उनके काव्य में परिस्थितिजन्य अनुभव को बड़ी कुशलता के साथ दर्शाया गया है। उपर्युक्त सभी भाव बोध एक ही रचनाकार की रचना में होने से ये बालकों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *हँसते महकते फूल, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृष्ठ 17*
2. *फुलवारी, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृष्ठ 11*
3. *करे तमाशा प्यारी मुनिया, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृष्ठ 12*
4. *जय-जय भारत प्यारा, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृष्ठ 5*
5. *फुलवारी, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृष्ठ 28*
6. *ममता की छाँव में, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृष्ठ 14*